

अनुवादक: डा. पीटर कमलेश्वर सिंह

Website in English & Hindi:  
[www.GrowthInGod.org.uk](http://www.GrowthInGod.org.uk)

July 2021

# परमेश्वर के वचन की अभिव्यक्तियां

इसके बाद परमेश्वर के पुत्र के रूप में तीन वर्षों के लिये उनकी अभिव्यक्ति आरम्भ हुई।

परमेश्वर के पुत्रों के साथ भी ऐसा ही हुआ। लम्बे समय की तैयारी के बाद वे उस बिन्दु पर पहुंचेंगे जहां पर वे परमेश्वर के फिलौठे पुत्र की बुद्धिमत्ता, शक्ति और प्रेम का अभिव्यक्त कर सकेंगे। लेकिन परमेश्वर द्वारा निर्धारित सम्पूर्ण उद्देश्य प्राप्ति का समय आना आवश्यक है। उनका परिवार पूर्ण हुआ आवश्यक है ताकि सभी अपने बड़े भाई के चरित्र और गुणों का दाहरा सकें।

## निष्कर्ष

हमने परमेश्वर के वचन की चार महान अभिव्यक्तियों पर विचार किया है।

- सृष्टी में परमेश्वर का वचन
- मनुष्य की भाषा में परमेश्वर का वचन
- परमेश्वर का वचन यीशु में देहधारी हुआ
- परमेश्वर का वचन उनके लोगों में देहधारी हुआ

ये सब परमेश्वर के आश्चर्यजनक बुद्धिमत्ता, कल्पना और शक्ति की अभिव्यक्तियां हैं।

इनमें प्रथम तीन इतिहास हैं। उनका उद्देश्य पूर्ण हुआ है। चौथे का कार्य प्रगति पर है। यह आरम्भ हुआ है परन्तु अभी पूर्ण नहीं हुआ है।

कलीसिया के इतिहास में वर्णित कलीसियाओं की तुलना में परमेश्वर के पुत्रों की अभिव्यक्ति बिलकुल अलग होगी। अधिकांश परंपरागत कलीसिया परमेश्वर के गुणों के ठीक प्रदर्शन में विफल रहे हैं। इसने परमेश्वर की शक्ति का अभिव्यक्त करने के बदले मनुष्य की कमजायियों का अभिव्यक्त किया है। इसने परमेश्वर की बुद्धिमत्ता का अभिव्यक्त नहीं करके मनुष्य की मूर्खता का अभिव्यक्त किया है। कई बार परमेश्वर के प्रेम का अभिव्यक्त करने के बजाय मानवीय घृणा और कलह का अभिव्यक्त किया है। ([बेबीलोन](#) देखें)।

अभी ये अब परिवर्तन हो रहे हैं। परमेश्वर एक नयी जाति उत्पन्न कर रहे हैं जो उनकी बुद्धिमत्ता, उनकी शक्ति और उनके प्रेम का अभिव्यक्त करेंगे। वे परमेश्वर के पुत्रों की अभिव्यक्ति होंगे।



इस बात का मैंने [धर्मशास्त्र और परमेश्वर का वचन](#) पुस्तिका में विस्तार से वर्णन किया है।

इसलिये **परमेश्वर क वचन** क्या है?

हमें गहराई से देखना होगा।

## वचन और आत्मा

उत्पत्ति की पुस्तक हमें बताती है कि परमेश्वर से दाचीजे प्रकट हुआ है: आत्मा और वचन। इन दोनों शब्दों के अर्थ क्या हैं?

### आत्मा (श्वास)

उत्पत्ति १: २ में हम पढ़ते हैं, “परमेश्वर का आत्मा (רוח, रुआख) जल के ऊपर मण्डलाता था”। इस हिब्रू शब्द רוח (रुआख) का अर्थ क्या हुआ है? इसका बुनियादी अर्थ है **हवा**। इसके बाद इसका उपयोग **श्वास** के अर्थ में हुआ लगा, क्योंकि श्वास हवा जैसी ही है जो मनुष्य अपने मुंह से छाड़ता है। इसके बाद इसका उपयोग आत्मा के अर्थ में हुआ लगा।

हिब्रू शब्द रुआख, ग्रीक शब्द πνευμα (पनेउमा) और लैटीन शब्द spiritus (स्पिरिटस), इन सभी शब्दों के अर्थ **श्वास, हवा या आत्मा** होते हैं।

मनुष्य के समान ही क्या परमेश्वर का भी मुंह हुआ है? और क्या उससे हवा निकलती है? नहीं, ऐसा नहीं है, लेकिन परमेश्वर के मुंह से क्या निकलता है, इसे दिखाने के लिये मनुष्य की भाषा में यह सबसे अच्छा विवरण है।

श्वास जीवन का चित्र भी है। सभी जीवित प्राणी श्वास लेते हैं। जब श्वास रुक जाती है, जीवन चली जाती है।

### वचन

बाइबल में हिंदी शब्द वचन आउर अंग्रेजी शब्द word, हिब्रू शब्द दावार (דָּבָר) और ग्रीक शब्द लोगोस (λογος) शब्दों का अनुवाद है, लेकिन ‘वचन’ शब्द अच्छा अनुवाद नहीं है। दोनों ही

दिया, “मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है” (यूहन्ना १२: २४)।

उनके कहने का अर्थ क्या था? क्या वह इन यूनानियों से नहीं मिलना चाहते थे, या नहीं चाहते थे कि वे उनसे मिलें? निसन्देह वह मिलना चाहते थे। लेकिन गिनती के कुछ यूनानियों से मिलने की तुलना में उनका उद्देश्य बहुत वृहत् था। प्रत्येक शारीरिक आंख, यहूदी और अन्य जाति, स्त्री और पुरुष, बच्चे और बुढ़े, सभी के लिये यीशु का देखना आवश्यक है और एक दिन, “हर एक आंख उसे देखेगी” (प्रकाश १: ७)। लेकिन कैसे? यह तभी सम्भव था, जब वह बीज के रूप में, जमीन में पड़कर मरते और तब तक बढ़ते जाते, बढ़ते जाते और बढ़ते जाते, तब तक जब तक कि आकाश के नीचे इस पृथ्वी के सभी देश के सभी स्त्री पुरुष, जवान वृद्ध, धनी गरीब, विद्वान और साधारण सभी मनुष्य उनके रूप में रूपान्तरण नहीं हो जाते। सिर्फ तभी सब आंखों के लिये यीशु का देखना सम्भव होगा।

हर एक आंख यीशु का देखेगी जब वह “बादलों में आयेंगे” (प्रकाश १: ७)। ये बादल कैसे होंगे? वे पानी से लदे सामान्य बादल नहीं होंगे जिन्हें हम राज देखते हैं। वे मनुष्यों से बने बादल होंगे: ऐसे मनुष्य जिनका यीशु के साथ स्वर्गीय स्थानों में, जो यीशु ने तैयार किया है, बैठने के लिये पुनरुत्थान हुआ है। वे सब साक्षियों के बादल होंगे। वे सब उस बीज के फल होंगे जो जमीन में पड़ा, मर गया और बहुगुणा फल फलाया।

## परमेश्वर के पुत्रों की अभिव्यक्ति

क्या इन चीजों का हुआ मुमकिन है? क्या हम और आप यीशु के समान बन सकते हैं? क्या हम भी परमेश्वर के गुण और चरित्र का अभिव्यक्त कर सकते हैं? यह साधारणतया असम्भव लगता है। यह हमारे पहुंच से बहुत दूर लगता है। फिर भी यीशु और नये नियम के तीन महत्वपूर्ण लेखकों, पतरस, पौलुस और यूहन्ना का कहना है कि ऐसा ही हुआ वाला है।

यीशु ने कहा, “मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ” (यूहन्ना १४: १२)। मृत्यु के बाद चार दिन कब्र में पड़े व्यक्ति का फिर से जीवित करने से भी कई बड़ा कार्य होसकता है क्या? मैंने [चिन्ह और आश्चर्य कर्म](#) में इसका वर्णन किया है। उनके अनुयायी उनकी

पतरस ने लिखा, “क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है” (१ पतरस १: २३)।

यूहन्ना ने लिखा, “जाकार्ड परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उस में बना रहता है: और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है” (१ यूहन्ना ३: ९)।

परमेश्वर के नये परीवार के जन्म में हम उन्हीं तीन विशेषताओं का देखते हैं जिन्हें हम यीशु के जन्म में भी देखते हैं: वचन, आत्मा और बीज। परीवार के छोटे भाइयों का जन्म भी ठीक बड़े भाई के जन्म के समान ही है। सम्पूर्ण प्रकृति में यह सामान्य बात है कि छोटे भाई बड़े भाई के समरूप बनें। जब मैं दस वर्ष का था, मेरा बड़ा भाई चार वर्ष का था और मुझसे बहुत बड़ा था, साथ ही वह मुझसे सभी बातों में श्रेष्ठ था। आगे चलकर मैंने उसे पकड़ लिया और आज मेरी लम्बाई उससे एक इंच अधिक है!

इसका अर्थ क्या है? इसका अर्थ सिर्फ यही है कि हम अपने बड़े भाई यीशु के स्वरूप में अपने आप का विकशित करें। इसका अर्थ यही है कि जिस प्रकार उन्होंने अपने पिता के गुणों और विशेषताओं का अभिव्यक्त किया, हम भी ऐसा ही करें। यीशु ने परमेश्वर की शक्ति का प्रदर्शन किया। हमें भी उसी प्रकार परमेश्वर की शक्ति का प्रदर्शन करना चाहिये। यीशु ने परमेश्वर की बुद्धिमत्ता दिखाई, हमें भी ऐसा ही करना चाहिये। यीशु परमेश्वर के प्रेम से भरपूर थे, हमें भी वैसा ही जाना चाहिये। यीशु ने इन सभी बातों का एक वाक्य में व्यक्त किया है: “मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जा मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जा मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ” (यूहन्ना १४: १२)।

परमेश्वर की योजना थी कि यीशु का असिमीत पुनरुत्पादन हो उनकी इच्छा थी कि यीशु के सदृश ही असंख्य सन्तान उत्पन्न हों। परमेश्वर का वचन यीशु में देहधारी हुआ था और इस प्रकृति की पनरावृत्ति जाना आवश्यक था। परमेश्वर के वचन का उन सभी भाइयों और बहनों में देहधारी जाना आवश्यक था, जिनके वह बड़े भाई थे।

अपने प्रस्थान के थोड़े समय पूर्व, यीशु ने बीज के विषय में बात की थी। फसह के आखिरी पर्व मनाने के लिये जब यीशु यरुशलेम में थे, कुछ यूनानी लोका जिन्होंने यीशु के विषय में सुना था, उनसे मिलना चाहते थे। (यूहन्ना १२: २०-२५)। यीशु ने उन्हें रहस्यपूर्ण और अप्रासंगिक उत्तर

शब्द दावार और लोका का अर्थ शब्द वचन की तुलना में वृहत् है। हिंदी या अंग्रेजी का काई भी एक शब्द इनका पूर्ण अर्थ नहीं व्यक्त कर सकता है।

दावार का बुनियादी रूप में अर्थ जाना है ‘बाणी गई बात’, एक शब्द, एक वाक्य या इससे भी अधिक। इसका सरल अर्थ ‘चीज’ भी है। इसलिये परमेश्वर के वचन का अर्थ परमेश्वर द्वारा बाणी गई काई भी बात या परमेश्वर से आई हुई काई भी चीज हो सकता है। यूहन्ना १: १ वास्तव में कहता है, “वचन परमेश्वर था”। (स्ट्रांग के द्वारा दी गयी [davar](#) शब्द की परिभाषा देखें)।

ग्रीक शब्द ‘लोका’ का अर्थ भी हिंदी शब्द वचन की तुलना में वृहत् है, इसमें विचार, प्रवचन और बतचीत आते हैं। प्रेरितों की पुस्तक के साथ साथ नये नियम की अन्य पुस्तकों में भी ‘लोका’ शब्द का साधारण अर्थ ‘सुसमाचार’ जाना है। (स्ट्रांग द्वारा दी गई [λογος](#) शब्द की परिभाषा देखें)।

## बीज

धर्मशास्त्र में वचन और बीज के बीच गहरा सम्बन्ध है। जब यीशु ने बीज बाँने वाले के द्विष्टान्त का अर्थ चेलों के सामने खाना, तब उनका कहना था कि, “बीज परमेश्वर का वचन है” (लुका ८: ११)। पतरस ने भी समान भाषा का उपयोग किया था: “तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है”। (१ पतरस १: २३)

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में बीज एक बहुत ही महत्वपूर्ण चीज है। मनुष्य के शुक्राणु के एक कोशिका का आकार एक मिलिमीटर के पांच सौवें भाग के बराबर जाना है। अपनी आंखों से देखने के लिये इसे दस सौ गुणा बड़ा करना पड़ेगा। फिर भी इस सुक्ष्म बीज में असिमीत सूचनार्यें भरी पडी हैं। इसमें पिता की पूर्ण प्रतिलिपि भरी जानी है। जाहिर है बीज में पिता की बाहरी आकृति, जैसे कि त्वचा का रंग, उनकी आंखें और उनके केश के रंग और उनके शरीर का आकार और माप भरा जाना है। इसमें उनके अदृश्य गुण जैसे कि दिमाग, चरित्र और स्वभाव भी शामिल हैं।

बीज परमेश्वर के वचन की आश्चर्यजनक अभिव्यक्ति है। बाद में हम यह भी देखेंगे कि प्राकृतिक बीज आत्मिक बीज का प्रतिरूप है। यीशु अपने पिता के बीज से पैदा हुए और पिता के गुण और चरित्र का हबहु प्रदर्शित किया।

## परमेश्वर के वचन की चार अभिव्यक्तियां

हम जैसे जैसे धर्मशास्त्र के पन्नों में मनुष्य के साथ परमेश्वर के बर्ताव का इतिहास देखते हैं, हम परमेश्वर के वचन की क्रमिक अभिव्यक्तियों को पाते हैं। हम मुख्य चार अभिव्यक्तियों को क्रमशः देखेंगे।

### १= सृष्टी में परमेश्वर का वचन

“आकाशमण्डल यहाँ के वचन से, और उसके सारे गण उसके मुँह ही श्वास से बने” (भजन ३३: ६)।

उत्पत्ति के पहले अध्याय में सृष्टी का वर्णन है। परमेश्वर ने अपने वचन के द्वारा सभी चीजों की सृष्टी की। उनके शब्दों ने भौतिक आकार ले लिया।

परमेश्वर के प्रथम लिखित वचन हैं, “**उजियाला हा**” इसके फलस्वरूप मनुष्य के कल्पना से परे एक विशाल शक्ति का प्रस्फुटन हुआ जिसे वैज्ञानिक ‘बीग बैंग’ कहते हैं। प्रकाश इस शक्ति का एक सरल स्वरूप है, जिसे परमेश्वर ने ऐसा बनाया कि इसके ‘वेभ लेंथ’ के कारण हमारी आंखें इसे देख सकें। रेडियतरंग के साथ साथ अन्य तरंग हमारे लिये अदृश्य हैं।

यह बड़ा धमाका (बीग बैंग) मनुष्य के सभी कल्पनाओं से परे एक बहुत बड़े आणविक बिस्फोट के समान ही था। कोई भी वैज्ञानिक नहीं बता सकता कि इतनी बड़ी शक्ति कहां से आई। मेरा विश्वास है कि यह परमेश्वर के वचन, दावर, या परमेश्वर से आयी ‘एक चीज’ से उत्पन्न हुई। सारे ब्रह्माण्ड में उपलब्ध सभी पदार्थ समय के एक क्षण में अस्तित्व में आगये। ये पदार्थ मिलकर तारे और आकाश गंगाओं को बनाया। परमेश्वर के वचन (दावर, लाशास) में असिमीत शक्ति है।

परमाणविक प्रतिक्रियाओं ने इस पदार्थ को हाइड्रोजन, आक्सीजन, कार्बन, लाहा, चांदी, साजा और अन्य सभी तत्वों में परिवर्तित कर दिया, जिनसे हमारा संसार भरा पडा है। ये सभी चीजें भौतिक और रासायनिक नियमों के अनुसार हुई जिन्हें परमेश्वर ने निर्धारण किया था। ये नियम परमेश्वर के वचन (लाशास) के हिस्सा हैं।

यीशु ने परमेश्वर की शक्ति को अभिव्यक्त किया। कोई भी परिस्थिति उनके नियन्त्रण से बाहर नहीं थी। वह सभी प्राकृतिक नियमों को परास्त कर सकते थे। शराब की आवश्यकता थी, उन्होंने पानी को शराब में परिवर्तित कर दिया। भोजन कम पड गया? उन्होंने उपलब्ध रोटियों और मछलियों को कई गुणा बढ़ा दिया। नाव नहीं है? यीशु पानी के उपर चल दिये। गलील सागर में तूफान? यीशु ने आज्ञा दी और तूफान शान्त! यीशु के मित्र लाजरस की मृत्यु होगयी? यीशु ने उसे कब्र से निकल आने की आज्ञा दे दी।

यीशु ने परमेश्वर के प्रेम को अभिव्यक्त किया। तीन वर्षों तक इजराइल देश में पैदल चलकर बيمारों को चंगा कर, कटियों को शुद्ध कर, मृतकों को जीवित कर और दुष्टात्माओं को निकालकर यीशु ने प्रेम और दया दिखाई। अन्त में उन्होंने ने मनुष्य जाति को पाप से बचाने के लिये सर्वोच्च बलिदान अर्पण किया। “**इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे**” (यूहन्ना १५: १३)।

### ४= परमेश्वर का वचन उनके अपने लोगों में देहधारी हुआ

यीशु बहुत से भाइयों में पहिलौठा थे। वह परमेश्वर की नई सृष्टी के प्रतिरूप थे। परमेश्वर ने ऐसी योजना नहीं बनाई कि यीशु एक मात्र सन्तान रहें। उनकी इच्छा थी कि यीशु एक बहुत बड़े परिवार में बहुत से भाई और बहनों में प्रथम सन्तान के रूप में रहें।

इस परिवार को किस प्रकार जन्म लेना था? यीशु, पतरस और यूहन्ना, तीनों ने नये जन्म के विषय में बात की है।

यीशु ने इसका विस्तृत वर्णन किया है। “**मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता**”। नीकुदेमुस ने उस से कहा, “मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योकर जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दुसरी बार प्रवेश कर के जन्म ले सकता है?” यीशु ने उत्तर दिया, कि “**मैं तुझ से सच सच कहता हूँ; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भान न कर, कि मैं ने तुझ से कहा; कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है**” (यूहन्ना ३: ३-७)।

- गब्रिएल ने आगे कहा, “पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जन्म उत्पन्न होवेगा है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।” (लुका १: ३५)।
- परमेश्वर का वचन बीज के रूप में मरियम के गर्भ में रक्षण हुआ था।

यीशु पूर्णरूप से अद्वितीय थे। उनसे पहले उनके समान कोई भी व्यक्ति पैदा नहीं हुआ था। उनके पूर्ववर्ति और यीशु के बीच का अन्तर इतना बड़ा था कि उन्होंने यहाँ तक कह दिया, “जितने मुझ से पहिले आए; वे सब चार और डाकू हैं” (यूहन्ना १०: ८)। इतना बड़ा बयान!

पुराने नियम के समय में परमेश्वर का वचन भविष्यद्वक्ताओं और परमेश्वर के चुने गये लोगों के पास पहुंचता था। यह अपने आप में आश्चर्यजनक था, लेकिन परमेश्वर का वचन उनके पास सिर्फ पहुंचता था। यह उनमें रहता नहीं था।

यीशु पूर्णरूप से इनसे अलग थे। चारोंसुसमाचार की पुस्तकों में ढूँढकर देखिए, ‘परमेश्वर का वचन यीशु के पास पहुंचा’, ऐसा कहीं नहीं मिलेगा। परमेश्वर का वचन उनके पास कभी नहीं आया। इसके बजाय, परमेश्वर का वचन उनके अन्दर था और उनमें से बाहर निकलता था। वह स्वयं परमेश्वर का वचन थे। पौलुस ने लिखा, “परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया” (२ कोरि= ५: १९)।

यीशु अपने पिता के पुत्र थे। उनके पिता का बीज, जो परमेश्वर का वचन था, उनमें था, जिसके फलस्वरूप यीशु ने अपने पिता के सभी विशेषतायें और गुणों को अभिव्यक्त किया। वे गुण क्या थे? परमेश्वर के तीन महानतम गुणों में, उनकी बुद्धिमत्ता, उनका प्रेम और उनकी शक्ति हैं। यीशु ने इन सभी को अभिव्यक्त किया।

यीशु ने परमेश्वर के बुद्धिमत्ता को अभिव्यक्त किया। १२ वर्ष की उम्र में यीशु ने धर्म गुरुओं के साथ मन्दिर में बात की और “जितने उस की सुन रहे थे, वे सब उस की समझ और उसके उत्तरों से चकित थे” (लुका २: ४७)। बाद में, यीशु को पकड़ने गये अधिकारियों ने कहा, “कि किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न कीं” (यूहन्ना ७: ४६)। कोई भी उन्हें परास्त नहीं कर सकता था या तर्क वितर्क के जाल में नहीं फंसा सकता था। सभी परीस्थितियों में उन्होंने ने परमेश्वर की बुद्धिमत्ता को अभिव्यक्त किया।

कुछ ताराओं के चारों ओर ग्रह बने और इनमें से एक ग्रह – हमारी पृथ्वी को परमेश्वर ने विशेष उद्देश्य के लिये चुन लिया।

परमेश्वर ने इस ग्रह पर अपने वचन के द्वारा जीवन की सृष्टि की। जीवन के सबसे साधारण अवस्था में भी पदार्थ के अकार्बनिक अवस्था से जीवित कार्बनिक अवस्था में परिवर्तन की व्याख्या कोई भी वैज्ञानिक नहीं कर सकता है। सिर्फ परमेश्वर का वचन ही यह उपलब्धी प्राप्त कर सकता है।

परमेश्वर ने जीव विज्ञान और क्रमिक विकाश के नियमों को बनाया और इन्हीं नियमों के द्वारा सूक्ष्मतम जीवित कोशिकायें भी वन वृक्षों और जीव जन्तुओं के रूप में विकसित हो गयीं। ये नियम परमेश्वर के वचन की अभिव्यक्ति थे। विगत दस दियों में वैज्ञानिकों ने इन नियमों में अधिकांश की खोज की है और समझा है, लेकिन अधिकांश वैज्ञानिक इन नियमों के रचयिता को ढूँढ पाने में असमर्थ रहे हैं।

ब्रह्माण्ड में सबसे उलझी हुई चीज मनुष्य का दिमाग है। इसमें १०० खरब न्यूरोन होते हैं और प्रत्येक न्यूरोन दूसरे दस हजार न्यूरोन से जुड़े होते हैं। लेकिन क्या आप इस बात पर विश्वास कर सकते हैं कि इस दिमाग को बनाने के लिये आवश्यक सभी जानकारियाँ एक छोटे से बीज अर्थात् मनुष्य के वीर्य में मौजूद रहता है। यह भी आश्चर्यजनक बात है कि इस दिमाग में माता और पिता, दोनों के विशेष स्वभाव समावेश होते हैं।

परमेश्वर ने एक वचन और बाला, “हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं” (उत्पत्ति १: २६)। मेरे विचार में यह परमेश्वर की सृष्टि की पराकाष्ठा है। क्रमिक विकाश के खरबों वर्ष बाद अन्त में उन्होंने एक ऐसा शरीर बनाया जो उनके स्वरूप में बने मनुष्य के लिये उपयुक्त था। “पर मेरे लिये एक देह तैयार किया” (इब्रा १०: ५)। प्राकृतिक संसार की सृष्टि की यह पराकाष्ठा थी।

इन सभी बातों को बाइबल में सिर्फ एक वाक्य में व्यक्त किया गया है: “विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है” (इब्रा ११: ३)।

परमेश्वर के वचन में असीम शक्ति, असीम बुद्धि और असीम कल्पना निहित है।

सृष्टि में परमेश्वर के वचन की अभिव्यक्ति बिल्कुल आश्चर्यजनक थी, लेकिन इसके बाद परमेश्वर के वचन की जो अभिव्यक्तियाँ हमें वाली थी, वे और भी आश्चर्यजनक थीं।

## (सृष्टी और क्रमिक विकाश देखें।)

### २= मनुष्य की भाषा में परमेश्वर का वचन

परमेश्वर के द्वारा मनुष्य की सृष्टी हाने के बाद, हम परमेश्वर के वचन की पूरी तरह नयी अभिव्यक्ति देखते हैं। उस समय परमेश्वर के वचन की अभिव्यक्ति मनुष्य की भाषा – हिब्रू में हुई। धर्मशास्त्रों में परमेश्वर द्वारा बाली गई बातों को लिखा गया।

पूरे पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों से बहुतसे भविष्यद्वक्ताओं और अपने सेवक सेविकाओं के द्वारा बात की थी। “परमेश्वर का वचन ... के पास आया”, यह वाक्यांश पुराने नियम में ९२ बार उल्लेख हुआ है। नीचे इनमें कुछ दिये गये हैं:

- “यह वचन दर्शन में अब्राहम के पास पहुंचा” (उत्पत्ति १५: १)
- “यहवाका का यह वचन नातान के पास पहुंचा” (२ शम् ७: ४)
- “तब यहवाका का यह वचन सुलैमान के पास पहुंचा,” (१ राजा ६: ११)
- “यहवाका का यह वचन एलियाह के पास पहुंचा” (१ राजा १८: १)
- “तब यहवाका का यह वचन मेरे (यिर्मयाह के) पास पहुंचा” (यिर्म १: ४)
- “यहवाका का यह वचन मेरे (यहेजकेल के) पास पहुंचा” (यहेज ३: १६)
- “यहवाका का यह वचन अमितै के पुत्र यामा के पास पहुंचा” (यामा १: १)

पुराने नियम में मुख्य विषय व्यवस्था या तारह है, और व्यवस्था में मुख्य विषय ‘दस आज्ञा’ है। हिब्रू भाषा में इन्हें ‘दस वचन’ (दस डवारिम) के रूप में जाना जाता है।

परमेश्वर ने मूसा के द्वारा जगद्व्यवस्था दी, वे सभी सर्वश्रेष्ठ थे और पृथ्वी पर किसी मनुष्य के द्वारा दी गयी व्यवस्था की तुलना में बेहतर थे। व्यवस्था के विषय में साक्षी देते हुए दाउद ने कहा, “यहवाका की व्यवस्था खरी है, वह प्राण का बहाल कर देती है” (भजन १९: ७), लेकिन दुख की बात है कि यह अपना उद्देश्य प्राप्त नहीं कर सका। व्यवस्था त्रुटि रहित था, लेकिन परमेश्वर के चुने हुए लोग, मेरे पूर्वज, यहूदी समुदाय, त्रुटिरहित नहीं थे। उन्होंने दस की दस आज्ञाएं तारह दी। परमेश्वर का अपने वचन की एक और अभिव्यक्ति देनी पडी। जैसा कि परमेश्वर ने यिर्मयाह के द्वारा बाला, “फिर यहवाका की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और

यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूंगा=== जगवाचा में उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा” (यिर्म ३१: ३१, ३३)। (नई वाचा देखें)। वचन देहधारी हाम्रा आवश्यक था।

### ३= परमेश्वर का वचन यीशु के रूप में देहधारी हुआ

नये नियम के समय परमेश्वर बालना जारी रखते हैं, लेकिन एक बहुत बड़ा परिवर्तन हाम्रा है। हम पढते हैं कि “उस समय परमेश्वर का वचन जंगल में जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा” (लुका ३: २), लेकिन यह अन्तिम घटना है जहां हम पढते हैं, “परमेश्वर का वचन पहुंचा”। ऐसा क्या? यीशु हमें बताते हैं: “व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे” (लुका १६: १६)।

यूहन्ना ने सुसमाचार की अपनी पुस्तक का इन शब्दों के साथ आरम्भ करता है, “आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था”। (यूहन्ना १: १)। वह आगे कहता है, “और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया” (यूहन्ना १: १४)।

इब्रानियाकी पुस्तक के आरम्भिक शब्द इस प्रकार हैं: “पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप दादों से थाम्रा थाम्रा कर के और भांति भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर के। इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है” (इब्रा= १: १-२)।

इन दाम्रा उदाहरणों में हम देखते हैं कि परमेश्वर का वचन वही, एक ही था जिसने सृष्टी की रचना की और यीशु के रूप में देहधारी हुआ।

यीशु का जन्म या यूं कहें कि उनका गर्भधारण किस प्रकार हुआ था? उनका जन्म तीन चीजों से हुआ: वचन, आत्मा और बीज से।

- परमेश्वर का वचन गब्रिएल स्वर्गदूत के द्वारा मरियम के पास पहुंचा: “और देख, तू गर्भवती हाम्रा, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न हाम्रा; तू उसका नाम यीशु रखना” (लुका १: ३१)।